दिनांक 17 अप्रैल, 2017 को खादी और ग्रामोद्योग आयोग द्वारा अभ्यारण्य कार्यशाला के अवसर पर माननीया राज्यपाल महोदया का अभिभाषण

जोहार!

खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित दो दिवसीय ''अभ्यारण्य कार्यशाला'' के उद्घाटन समारोह में आप सभी के मध्य सम्मिलित होकर अपार प्रसन्नता हो रही है। झारखण्ड की धरती वीरों की भूमि है। यहाँ कई ऐसे सपूत एवं महानायक हुए जिन्होंने अपने समाज एवं देश के लिए सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। अमर शहीद बिरसा मुंडा, सिद्धो–कान्हू, चाँद–भैरव, शेख भिखारी, टिकैत उमराव सिंह, ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव, टाना भगत आदि कई महान विभूति इसके उदाहरण हैं।

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि भारत का यह भू–भाग प्राकृतिक दृष्टिकोण के साथ–साथ खनिज सम्पदा के मामले में भी समृद्ध है। इसके साथ ही यहाँ के युवा भी मेहनती हैं, लेकिन जरूरत है उन्हें सही मार्गदर्शन की। विडम्बना है कि अपार खनिज सम्पदा तथा वन उत्पाद के बावजूद इन प्रदेशों की आबादी का एक बड़ा हिस्सा अपेक्षा के अनुरूप विकास नहीं कर पाया है। कई राज्य इस समस्या से जूझ रहे हैं एवं इनके विकास के प्रति चिन्तनशील है। ऐसे में बेरोजगार युवाओं को भटकाव से रोकने एवं विकास की मुख्यधारा में जोड़ने हेतु, सर्वप्रथम उन्हें रोजगार मुहैया कराने की दिशा में पहल करनी होगी। इससे वे आर्थिक रूप से मजबूत एवं सशक्त होंगे एवं सामाजिक दशा में भी सुधार होगा।

मैं इस अवसर पर झारखण्ड के टाना भगत समुदाय का उल्लेख करना चाहूँगी। इन्होंने गाँधी जी के बतलाये मार्ग पर चलकर सत्याग्रह आन्दोलन में बढ़–चढ़ कर भाग लिया और स्वदेशी को पूर्णतः अपनाया। हम सभी देखते हैं कि आज भी टाना भगत समुदाय महात्मा गाँधी जी द्वारा बताये गये मार्ग का पालन करते हैं और स्वनिर्मित खादी का कुर्ता, धोती एवं गाँधी टोपी पहनते हैं। ये अपने आँगन में चरखा तथा तिरंगा का पूजा करते हैं। इसकी जितनी भी सराहना की जाय, कम है। परन्तु विगत कई वर्षों से टाना भगत उचित सहायता की आशा में है। ऐसे में खादी और ग्रामोद्योग आयोग इन टाना भगतों के आर्थिक विकास में अहम भूमिका अदा कर सकता है।

हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का भी यही विचार था कि ग्रामीणों, आदिवासियों को उनके कार्य की उचित मजदूरी मिले जिससे उनका समग्र विकास हो। ऐसे में खादी और ग्रामोद्योग आयोग ग्रामीण क्षेत्र के कारीगरों को अपने कार्यक्रमों से जोड़कर उन्हें आर्थिक एवं सामजिक दृष्टि से सबल बना सकता है। साथ ही विलुप्त हो रहे हुनर का संरक्षण कर सकता है, उन्हें एक बेहतर **Platform** प्रदान कर सकता है। आज खादी और ग्रामोद्योग आयोग, खादी के साथ साथ **Village Industries Sector** में भी बहुत सारे कार्यक्रम चला रहा है जैसे खनिज आधारित, वन आधारित, कृषि आधारित, पोलीमर एवं रसायन आधारित, **Rural Engineering & Bio-technique, Textile & Service based Industries** में प्रशिक्षण एवं रोजगार मुहैया करा रही है। इसके अलावा विशेष रूप से झारखण्ड में मधुमक्खी पालन की अपार संभावनाएं हैं ।

इसी के क्रम में झारखण्ड, उड़ीसा समेत अन्य प्रदेशों के आदिवासियों एवं अन्य के विकास हेतु दो दिवसीय कार्यशाला ''अभयारण्य'' का आयोजन किया जाना सराहनीय है। आशा है कि इसके जरिये लोगों में सामाजिक एवं आर्थिक विकास के प्रति जागरूकता आयेगी। विकास के प्रति बेहतर रूप–रेखा तैयार होगी और दूरगामी परिणाम प्राप्त होंगे, ऐसी हमारी अपेक्षा है।

जय हिन्द! जय झारखण्ड!